luditur. N.26.6.: प्राणयोश्च पणावहे; 26.6.: पणावः· 2) in lusum ponere, in aleam dare. MAH.2.2172.: पणस्व कृष्णाम् पाञ्चालीन् तया ’स्मानम् पुनर् जय; 2254.: द्रौपदीं पणयते· 3) lucrifacere. N.26.19.: स रत्नकोषनिचयैः पाणेन पणितो ऽपि च· 4) vendere. पण्य vendendus, venalis, v. पण्यस्त्री· (Cf. lith. *pantas* pignus; germ. vet. *phant* id.; lat. *veneo, vendo*; v. वणिज्·)

c. वि *i.q. simpl.* MAH.1.1191.

पण *m.* (r. पण् s. अ) 1) ludus. N.7.8.9.3. 2) pretium. HIT.131.16.18.

1. पण्ड् 1. *A.* (गतौ) ire.

2. पण्ड् 10. *P.* (संहतौ) coacervare, accumulare, colligere. (*Cf.* पिण्ड्·)

पण्डा *f.* (r. पण्ड् s. आ) scientia.

पण्डित *m.* (a praec. s. इत) doctus, sapiens. HIT.7.12.13.

पण्यस्त्री *f.* (e पण्य venalis et स्त्री femina) meretrix. HIT. 48.11.

1. पत् 1. *P. interdum A.* 1) cadere, *c. loc. loci.* BH.16.16.: पतन्ति नरके; DR.5.4.: पातालमुखे पतन्तम्; 24.: पपात शाखी ’व निकृत्तमूलः; MAH.1.3569.: पुण्यलोकात् पतमानः· *TROP.* peccare. MAN.9.200.: भज्यमानाः पतन्ति (Schol. पापिनो भवन्ति)· 2) volare. RIGV.46.3.: यद् वां रथो विभिष् पतात्; 48.6.: वयः पप्तिवांसः; BHATT.5.100.: पक्षी पपात खम्· — *Caus.* facere ut aliquis cadat. H.4.43.: पातयिष्यामि राक्षसम्; DR.8.11. Facere ut volet, *de sagittis.* R. Schl.II.63.22.: शरम्... अपातयम्· (Cf. पथ्, पद्; gr. ΠΕΤ, πίπτω c. redupl., aor. dor. ἔπετον; πέτομαι; ἵπταμαι, ut videtur cum redupl. ex πίπταμαι abjecto π; lat. *peto, impeto*; *penna*, ut videtur, per assimil. e *petna*, sicut e.c. scr. पन्न a पद्; v. पतत्र; hib. *ite* «feather, a wing, a fin» e *pite*? *iteach* «winged», *itealadh* «flying, volitation», *itealaighim* «I fly», *faoth, faodh* «a fall, falling»; cambro-brit. *pydu* cadere, nisi haec pertinent ad पद् q.v.)

c. अभि advolare, irruere, accurrere. MAH.1.1383.: खगो द्रुतम् अभिपत्य; H.3.20.: वधाया ’भिपपात ’नाम्; R.II.34.18.: तं रामो ऽभ्यपतत् क्षिप्रम्·

c. आ *id.* NALOD.1.21.: पततः कांश्चिद् अपश्यत् हिताया ’पततः; H.3.3.: तम् (राक्षसेश्वरम्) आपतन्तम् दृष्ट्वा; 3.4.: आपतत्य् एष दुष्टात्मा; 3.21. N.13.9.

c. आ praef. अभि exsilire. MAH.4.807.: अभ्यापतद् भीमः शयनात्·

c. आ praef. सम् adire. MAH.1.7213.: हर्षं समापेतुः· Coire *cum femina.* MAH.1.2461.

c. उत् evolare, *auffliegen.* MAH.1.1335.: वितत्य पक्षौ नभ उत्पपात· Exsilire. N.11.14.: मुहुर् उत्पतति बाला मुहुर् पतति विह्वला; H.4.37.: उत्पपात युधिष्ठिरः· — उत्पतित qui evolavit, exsiluit; *de sono,* clarus. BR.1.3.: शब्दम् भृशम् उत्पतितं शुश्राव·

c. उत् praef. सम् *id.* N.1.22.: हंसाः समुत्पत्य; 3.15.: आसनेभ्यः समुत्पेतुः·

c. नि 1) cadere, decidere, decumbere, procumbere. N. 13.14.: निपेतुर् धरणीतले; SA.2.26.: सकृद् अंशो निपतति· 2) devolare, *niederfliegen.* N.1.23.: निपेतुस् ते गरुत्मन्तः· 3) accidere. HIT.9.13.: मरणव्याधिशोकानाङ् किम् अद्य निपतिष्यति· *Caus.* निपातयामि prosternere, dejicere. H.4.52.: शीघ्रम् एष निपात्यताम्; HIT.52.6.: निपात्यते क्षणेन ’धः (शिला)·

c. नि praef. प्र procumbere, se prosternere *reverentiae causâ, c. acc. pers.* A.2.9.: धनञ्जयश्च तेजस्वी प्रणिपत्य पुरन्दरम्·

c. नि praef. वि i.q. निपत्· *Caus.* MAH.1.5279.: शिरो ऽस्य विनिपात्यताम्; MAN.11.127.: राजन्यम् विनिपात्य (Schol. निहत्य)·

c. नि praef. सम् concurrere. MAH.2.2003.3.14899. — *Caus.* congregare, convocare. N.4.3.

c. निस् (निष्पत्, gr.79.) excidere, evolare, excurrere, effugere, se ejicere, se proruere, egredi. MAN.12.15.; A.10.62.

c. निस् praef. वि *id.* MAN.7.106. MAH.5.268.

c. परि 1) cadere, procumbere. N.19.20.: पर्यपतन् भू-